अंत्येष्टि संस्कार

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

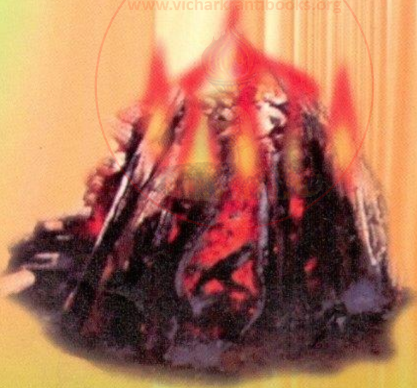

श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

अन्त्येष्टि संस्कार

लेखक :

श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मूल्य : ३) रुपये

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

॥ अन्त्येष्टि संस्कार ॥

मृत्यु के साथ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दर्शन एवं प्रेरणाएँ जुड़ी हुई हैं; किन्तु शोक के वातावरण में केवल आदर्शवादिता की बातें उचित नहीं लगती हैं। इसलिए प्रत्येक कर्मकाण्ड के महत्त्वपूर्ण शिक्षण को संवेदना के साथ जोड़कर सन्तुलित शब्दों में व्यक्त किया जाना चाहिए।

पूर्व व्यवस्था-

मृतक के लिए नये वस्त्र (कफन, ऊपर से ओढ़ाने के उपवस्त्र आदि), मृतक शय्या (ठठरी), उस पर बिछाने-उढ़ाने के लिए कुश एवं वस्त्र, मोटक (कुश के छोर भाग

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को गोल-गोल मोड़कर आधा गाँठ लगाकर मोटक बना लिया जाता है।) तैयार रखें।

मृतक शय्या की सज्जा के लिए पुष्प, पिण्डदान के लिए जौ मिलाकर गूँथा हुआ आँटा, अग्नि या माचिस। पूजन की थाली, रोली, अक्षत, पुष्प, अगरबत्ती, माचिस आदि उपलब्ध कर लें। सुगन्धित हवन सामग्री, घी, सुगन्धित समिधाएँ, चन्दन, अगर-तगर, सूखी तुलसी आदि समयानुकूल उचित मात्रा में एकत्रित कर लें। ३९९

अग्नि प्रज्वलित करने के लिए सूखा फूस, पिसी हुई राल, बूरा आदि पर्याप्त मात्रा में रख लेने चाहिए।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूर्णाहुति (कपाल-क्रिया) के लिए नारियल का गोला छेद करके घी डालकर तैयार रखें।

वसोर्धारा आदि घृत की आहुति के लिए एक लम्बे बाँस आदि में लोटा या अन्य कोई ऐसा पात्र बाँधकर तैयार कर लिया जाए, जिससे घी की आहुति दी जा सके।

॥ शव संस्कार ॥

घर में भूमि धोकर गोबर से लीपकर शुद्ध करके, इस पर स्वस्तिक आदि लिखकर तैयार रखें। शव को शुद्ध जल, गंगाजल से स्नान कराकर या गीले कपड़ों से पोंछकर, शुद्ध वस्त्र पहनाकर उस स्थान पर लिटाएँ। मृतक कर्म करने वाले पवित्र जल

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लेकर शव पर सिंचन करें। भावना करें कि शरीरगत पञ्चभूतों को यज्ञ के उपयुक्त बना रहे हैं।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवः तानऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसः, तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। ॐ तस्मा ऽअरंगमाम वो, यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपोजनयथा च नः।

अब चन्दन और पुष्पादि से शव को सजाएँ।

ॐ यमाय सोमं सुनुत, यमाय जुहुता हविः।

यमं ह यज्ञो गच्छति, अग्निदूतो अरंकृतः॥

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके बाद अन्त्येष्टि संस्कार करने वाला दक्षिण दिशा को मुख करके बैठे। पवित्री धारण करे फिर हाथ में यव-अक्षत, पुष्प, जल, कुश लेकर संस्कार का संकल्प करें-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य, अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे, वैवस्वतमन्वन्तरे, भूर्लोके, जम्बूद्वीपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, आर्यावर्त्तैकदेशान्तर्गते, ... क्षेत्रे, ... स्थले .... विक्रमाब्दे .... संवत्सरे .... मासानां मासोत्तमेमासे .... मासे .... पक्षे

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

..........तिथौ ....वासरे ....
गोत्रोत्पन्नः...... नामाऽहं .....(मृतक का नाम) प्रेतस्य प्रेतत्त्व-निवृत्त्या उत्तम लोक प्राप्त्यर्थं और्ध्वदेहिकं करिष्ये।

संकल्प के बाद प्रथम पिण्डदान करें। पिण्ड पेडू (कटि प्रदेश) पर रखा जाए। पिण्ड अँगूठे की ओर से पितृ तीर्थ मुद्रा में समर्पित करें।

.....नामाऽहं......... (मृतकनाम) मृतिस्थाने शवनिमित्तको ब्रह्मदैवतो वा, एष ते पिण्डो, मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्।

फिर शव उठाकर बाहर शव शय्या (ठठरी) तक लाएँ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ॐ वायुरनिलममृतमथेदं, भस्मान्त ॐ शरीरम्।

ॐ क्रतो स्मर कृत ॐ स्मर, क्रतो स्मर कृत ॐ स्मर॥

शय्या पर शव लिटाने के बाद उसे बाँधें, सज्जित करें और दूसरा पिण्ड अर्पित करें। पिण्ड पेट पर रखा जाए।

.....नामाऽहं........ (मृतकनाम) द्वारदेशे, पान्थ- निमित्तको, विष्णुदैवतो वा, एष ते पिण्डो, मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्।

हाथ में पुष्प लेकर स्वस्तिवाचन बोलें। भावना करें-मृतक की सद्गतिके लिए सूक्ष्म जगत् की दिव्य शक्ति का

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहयोग भरा वातावरण निर्मित कर रहे हैं।

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे, निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे, वसोमम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः,
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः,
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु, पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः, श्नप्त्रे स्थो विष्णोः, स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि, वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता, सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता, वसवो देवता रुद्रा देवता, ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता, विश्वेदेवा देवता, बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता, वरुणो देवता॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॐ शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः, शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः, शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः, सर्वॐशान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि॥

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्नऽआ सुव।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः॥ सर्वारिष्टसुशान्तिर्भवतु।

स्वस्तिवाचन के बाद पुनः ॐ क्रतो स्मर कृत ७ स्मर ..... मन्त्र बोलते हुए पुष्पांजलि अर्पित करें। अब शव यात्रा प्रारम्भ की जाए।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ॐ अग्ने नय सुपथा राये, अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयो ध्यस्मज्जुः राणमेनो, भूयिष्ठां ते नम उक्तिम् विधेम॥

चौराहे पर शव यात्रा रोक दें। तीसरा पिण्ड दान करें। पिण्ड पेट और वक्ष की सन्धि पर रखें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

.....नामाऽहं .... (मृतकनाम) चत्वरस्थाने खेचरनिमित्तं एष ते पिण्डो, मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्।

श्मशान घाट पर पहुँचकर शव उपयुक्त स्थान पर रखें और चौथा पिण्ड दें। पिण्ड छाती पर अर्पित करें।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

.....नामाऽहं......... (मृतकनाम) श्मशानस्थाने विश्रान्तिनिमित्तको, भूतनाम्ना रुद्रदैवतो वा, एष ते पिण्डो, मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्।

॥ भूमिसंस्कार ॥

चिता सजाने के लिए स्थान झाड़-बुहार कर साफ करें, जल से सिंचन करें, गोबर

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से लीपें, उसे यज्ञ वेदी की तरह स्वच्छ और सुरुचिपूर्ण बनाएँ। तैयार भूमि के पास अन्त्येष्टि करने वाला व्यक्ति जाए, उसकी परिक्रमा हाथ जोड़कर करे तथा उसे नमन करे।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोः, बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि, बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ ॥

अब जल पात्र लेकर मन्त्र के साथ कुशाओं से भूमि का सिंचन करें। भावना करें कि इस यज्ञ भूमि को मन्त्र शक्ति से पवित्र किया जा रहा है।

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो, मणिवाल-स्तऽआश्विनाः, श्येतः

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा, यामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥

॥ ॐ कारलेखन ॥

मध्यमा अँगुली से भूमि पर ॐ लिखें, पूजित करें। भावना करें कि भूमि के दिव्य संस्कारों को उभारा बनाया जा रहा है।

ॐ ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवासऽआगत। दाश्वाꣳसो दाशुषः सुतम्। उपयामगृहीतोऽसि विश्वेभ्यस्त्वा, देवेभ्यऽएष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ॥

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

॥ मर्यादाकरण (समिधारोपण)॥

यज्ञ-कुण्ड या वेदी के निर्माण हेतु चार बड़ी-बड़ी लकड़ियाँ चारों दिशाओं में स्थापित करें। शेष लकड़ियाँ इन चारों के भीतर ही रखी जाती हैं।

पहली समिधा (पूर्व दिशा में)

धन-साधनों के उपयोग की मर्यादा के लिए-

ॐ प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो, रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो, रक्षितृभ्यो नमऽइषुभ्यो, नमऽएभ्यो अस्तु। योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं, द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूसरी समिधा (दक्षिण दिशा में)

काम सेवन सम्बन्धी मर्यादा का पालन करने के लिए-

ॐ दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी, रक्षिता पितर ऽइषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो, रक्षितृभ्यो नमऽइषुभ्यो, नमऽएभ्यो अस्तु। यो३स्मान्द्वेष्टि यं वयं, द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।

तीसरी समिधा (पश्चिम दिशा में)

लोकेषणा को सीमित रखने के लिए-

ॐ प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः, पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो, रक्षितृभ्यो नमऽइषुभ्यो,

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नमऽएभ्यो, अस्तु। यो३स्मान्द्वेष्टि यं वयं, द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।

चौथी समिधा (उत्तर दिशा में)

द्वेष-दुर्भाव पर अंकुश रखने के लिए-

ॐ उदीची दिक्सोमोऽधिपतिः, स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो, रक्षितृभ्यो नमऽइषुभ्यो, नमऽएभ्यो अस्तु। यो३ स्मान्द्वेष्टि यं वयं, द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।

॥ चितारोहण ॥

अनुभवी व्यक्ति चिता सजाएँ। तत्पश्चात् ठठरी पर रखे हुए मृत शरीर को उठाकर चिता पर सुलाया जाए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ॐ अग्ने नय सुपथा राये, अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयो ध्यस्मज्जु: राणमेनो, भूयिष्ठां ते नम उक्तिम् विधेम॥

चितारोहण के बाद पाँचवाँ पिण्ड दिया जाए। पिण्ड सिर पर रखें।

.....नामाऽहं .... (मृतकनाम) चितास्थाने वायुनिमित्तको, यमदैवतो वा, एष ते पिण्डो, मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्।

अब शव के ऊपर भी लकड़ियाँ जमायें।

॥ शरीर यज्ञ आरम्भ ॥

कुशाओं में अंगार रखकर प्रज्वलित करें। इस अग्नि समेत एक परिक्रमा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मृतक की करके उसे उसके मुख के पास रख दें।

ॐ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना, पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि, पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे। अग्निं दूतं पुरोदधे, हव्यवाहमुपब्रु वे। देवाँऽआसादयादिह।

अग्नि तीव्र करने के लिए आवश्यकतानुसार राल का चूरा आदि डालें, हवा करें।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि, त्वमिष्टा पूर्ते स ७ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्, विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

॥ समिधाधानम् ॥

निम्न मंत्र बोलते हुए चार समिधाएँ दोनों सिरे घी में डुबोकर अग्नि में समर्पित करें-

१-ॐ अयन्त इध्म आत्मा, जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व। चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया, पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन, अन्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम।

-आश्व०गृ०सू० १.१०

२- ॐ समिधाऽग्निं दुवस्यत, घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम॥

www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

३- ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे, घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम॥

४- ॐ तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो, घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा। इदं अग्नये अंगिरसे इदं न मम॥ -३.१.३

॥ आज्याहुतिः ॥

लम्बी डण्डी के चम्मच से सात आहुतियाँ घृत की प्रदान करें।

१- ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम॥

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

२- ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय इदं न मम॥

३- ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम॥

४- ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम॥

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

५- ॐ भूः स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम॥

६- ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम॥

७- ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम॥

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

॥ गायत्री मन्त्राहुतिः ॥

सभी लोग सुगन्धित हवन सामग्री से गायत्री मन्त्र बोलते हुए सात आहुतियाँ समर्पित करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्, स्वाहा। इदं गायत्र्यै इदं न मम॥

www.vicharkrantibooks.org

॥ विशेष आहुति ॥

मृतक के व्यक्तित्व के सभी अंश यज्ञभूत हो रहे हैं, इसी भाव से आहुतियाँ समर्पित करें।

१- ॐ आयुर्यज्ञेन कल्पताᳪ स्वाहा।

२- ॐ प्राणो यज्ञेन कल्पताᳪ स्वाहा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

३- ॐ अपानो यज्ञेन कल्पता ७३ स्वाहा।
४- ॐ व्यानो यज्ञेन कल्पता ७३ स्वाहा।
५- ॐ उदानो यज्ञेन कल्पता ७३ स्वाहा।
६- ॐ समानो यज्ञेन कल्पता ७३ स्वाहा।
७- ॐ चक्षुर्यज्ञेन कल्पता ७३ स्वाहा।
८- ॐ श्रोत्रं यज्ञेन कल्पता ७३ स्वाहा।
९- ॐ वाग्यज्ञेन कल्पता ७३ स्वाहा।
१०- ॐ मनो यज्ञेन कल्पता ७३ स्वाहा।
११- ॐ आत्मा यज्ञेन कल्पता ७३ स्वाहा।
१२- ॐ ब्रह्मा यज्ञेन कल्पता ७३ स्वाहा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१३- ॐ ज्योतिर्यज्ञेन कल्पता छ
स्वाहा।

१४- ॐ स्वर्यज्ञेन कल्पता छ स्वाहा।

१५- ॐ पृष्ठं यज्ञेन कल्पता छ स्वाहा।

१६- ॐ यज्ञो यज्ञेन कल्पता छ स्वाहा।

१७- ॐ सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा, द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मणा। अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु, प्रतितिष्ठा शरीरैः स्वाहा।

॥ सामूहिक जप-प्रार्थना ॥

सभी परिजन चिता की ओर मुख करके शान्त भाव से बैठें। गायत्री मन्त्र का मानसिक जप करते हुए मृतात्मा की सद्गति की प्रार्थना करें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

॥ पूर्णाहुति-कपाल क्रिया ॥

जब खोपड़ी की हड्डियाँ आग पकड़ लें और तालू भाग में छेद करने की स्थिति बन जाए, अन्त्येष्टि करने वाले सज्जन बाँस हाथ में लें, चिता के शिरोभाग की ओर खड़े हों। तालु भाग पर वहाँ बाँस की नोक का दबाव देकर छेद कर दें। पूर्णाहुति का गोला बाँस के सहारे सिर के पास रख दें, सभी लोग हवन सामग्री होमें।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ पूर्णादर्वि परापत, सुपूर्णा पुनरापत।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वस्नेव विक्रीणा वहा, इषमूर्ज छशतक्रतो स्वाहा॥

ॐ सर्वं वै पूर्ण छस्वाहा॥

॥ वसोर्धारा॥

हम सबका जीवन स्नेह धारा में डूबा रहे, इसी भाव से घी की धार छोड़ें।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं, वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः, पवित्रेण शतधारेण सुप्वा, कामधुक्षः स्वाहा।

॥ परिक्रमा और नमस्कार॥

उपस्थित सभी लोग चिता की परिक्रमा करें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ॐ यानि कानि च पापानि, ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति, प्रदक्षिण पदे-पदे।

सभी लोग खड़ें हों, स्वर्गीय आत्मा के प्रति अपना सम्मान एवं सद्भाव प्रकट करते हुए नमन करें।

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये,
सहस्रपादा-क्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते,
सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

॥ शान्ति पाठ॥

सर्वत्र शान्ति की स्थापना के भाव से शान्ति पाठ करें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॐ शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः, शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः, शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः, सर्वॐशान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि॥ ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः॥ सर्वारिष्टसुशान्तिर्भवतु।

॥ अस्थि विसर्जन॥

अस्थियाँ चिता शान्त होने पर तीसरे दिन उठाई जाती हैं, जल्दी उठानी हों तो दूध युक्त जल से अथवा केवल जल से सिञ्चित करके उठाते हैं।

ॐ आ त्वा मनसाऽनार्तेन वाचा, ब्रह्मणा त्रय्या विद्यया पृथिव्याम्, अक्षिकायामपा ॐ रसेन निवपाम्यसौ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन अस्थियों को कलश या पीत वस्त्र में नीचे कुश रखकर एकत्रित किया जाए, फिर इन्हें तीर्थ क्षेत्र (नदी, तालाब या अन्य पवित्र स्थल) में ले जायें। हाथ में यव, अक्षत, पुष्प लेकर यम और पितृ आवाहन करें।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

॥ यम ॥

ॐ यमग्ने कव्यवाहन, त्वं चिन्मन्यसे रयिम्। तन्नो गीर्भिः श्रवाय्यं, देवत्रा पनया युजम्। ॐ यमाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥

॥ पितृ ॥

ॐ इदं पितृभ्यो नमोऽअस्त्वद्य ये, पूर्वासो यऽ उपरासऽईयुः। ये पार्थिवे

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रजस्या निषत्ता, ये वा नून ७७ सुवृजनासु विक्षु। ॐ पितृभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥

॥ अस्थि विसर्जन॥

अब अंजलि में अस्थि कलश या पोटली लेकर, यव-अक्षत-पुष्प के साथ निम्न मंत्र पढ़ते हुए अस्थियों को श्रद्धापूर्वक प्रवाहित किया जाए।

ॐ अस्थि कृत्वा समिधं तदष्टापो, असादयन् शरीरं ब्रह्म प्राविशत्।

ॐ सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा, द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मणा। अपो वा गच्छ यदि तत्र ते, हितमोषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः स्वाहा॥

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

॥ प्रार्थना ॥

हाथ जोड़कर निम्न मंत्र के साथ मृतात्मा एवं सत् शक्तियों का ध्यान करते हुए।

ॐ ये चित्पूर्व ऋतसाता ऋतजाता ऋतावृधः। ऋषीन्तपस्वतो यम तपोजाँ अपि गच्छतात्॥ ॐ आयुर्विश्वायुः परिपातु त्वा, पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात्। यत्रासते सुकृतो यत्र तऽईयुः, तत्र त्वा देवः सविता दधातु॥

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति, सृकाहस्ता निषंगिणः। तेषा ७ सहस्रयोजने व धन्वानि तन्मसि॥

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा.

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शुरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्वल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्वल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऎसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org